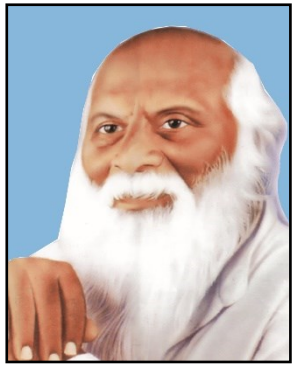




रयत शिक्षण संस्था संचालित

महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग

एम.ए. I-प्रथम अयन

पाठ्यचर्या 3 : भारतीय काव्यशास्त्र

ध्वनि काव्य के भेद

- प्रस्तुति -

डॉ. कामायनी गजानन सुर्वे

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

महात्मा फुले महाविद्यालय, पिंपरी, पुणे

ध्वनि सिद्धांत

ध्वनि संप्रदाय के प्रवर्तक : आचार्य आनंदवदर्धन

आचार्य आनंदवर्धन का ग्रंथ : 'ध्वन्यालोक'

नौवीं शताब्दी में आचार्य आनंदवर्धन द्वारा ध्वनि संप्रदाय का प्रवर्तन

ध्वनि सिद्धांत के विकास में योगदान देने वाले अन्य आचार्य

- आचार्य अभिनव गुप्त
- आचार्य मम्मट
- आचार्य राजशेखर
- आचार्य रुय्यक
- आचार्य वाग्भट्ट

ध्वनिकाव्य के भेद

❑लक्षणामूला ध्वनि :

- जिस ध्वनि के मूल में लक्षणा हो ,वह लक्षणामूला ध्वनि कहलाती है।
- इस ध्वनि में वाच्यार्थ बाधित रहता है।
- इसमें बोलनेवाले की वाच्यार्थ प्रकट करने की इच्छा(विविक्षा) नहीं होती इसीलिए इसे अविवक्षित वाच्य ध्वनि भी कहा जाता है।
- मुख्य अर्थ प्रकट न होने के कारण वह (मुख्यार्थ)अन्य अर्थ में संक्रमित हो जाता है अथवा बिलकुल ही छोड़ दिया जाता है।

❑लक्षणामूला ध्वनि के दो भेद :



❑अर्थांतर संक्रमित वाच्य ध्वनि:

यह ध्वनि वहाँ मानी जाती है जहाँ वाच्यार्थ अन्य (व्यंग्य) अर्थ में संक्रमित हो जाता है

सेना छिन्न ,प्रयत्न भिन्न कर,पा मुराद मनचाही।
कैसे पूजूँ गुमराही को ,मैं हूँ एक सिपाही ।।

- यहाँ 'सिपाही' शब्द का वाच्यार्थ है –योद्धा।
- किन्तु यहाँ वाच्यार्थ व्यंग्यार्थ में संक्रमित हुआ है ।
- 'सिपाही'शब्द का व्यंग्यार्थ है – कष्ट सहने वाला ,अपने प्राणों का बलिदान देने वाला,साहसी,देश का उन्नायक।

❑अत्यंत तिरस्कृत वाच्य ध्वनि:

यह ध्वनि वहाँ मानी जाती है जहाँ वाच्यार्थ व्यंग्यार्थ के द्योतन हेतु अत्यंत तिरस्कृत हो जाता है –

नीलोत्पल के बीच समाये मोती के आसूँ के बूँद ।

हृदय सुधा-निधि से निकले हो तब न तुम्हें पहचान सके ।।

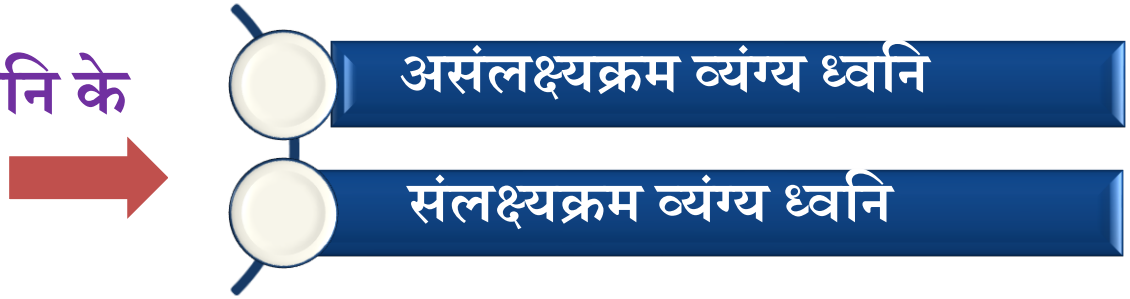
➢यहाँ 'नीलोत्पल' शब्द का वाच्यार्थ है –कमल ।

➢किन्तु यहाँ वाच्यार्थ व्यंग्यार्थ की प्राप्ति के लिए अत्यंत तिरस्कृत हुआ है ।

❑अभिधामूला ध्वनि :

- जिस ध्वनि के मूल में अभिधा हो ,वह अभिधामूला ध्वनि कहलाती है।
- इस ध्वनि में वाच्यार्थ बाधित नहीं होता ,अपितु बना रहता है और व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का साधन बन जाता है।
- इसमें बोलनेवाले की वाच्यार्थ छोड़ने की इच्छा नहीं होती।
- इसमें वाच्यार्थ न संक्रमित होता है और न ही तिरस्कृत।
- वक्ता वाच्यार्थ को अन्यपरक या व्यंग्यार्थ बोधक बनाता है।इसलिए इसे 'विविक्षितान्यपरक वाच्यध्वनि'भी कहा जाता है।
- इसमें वाच्यार्थ ही व्यंग्यार्थ को प्रकाशित करता है।

अभिधामूला ध्वनि के दो भेद :



❑असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि (रसध्वनि) :

- जहाँ वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ में क्रम होता हुआ भी लक्षित न हो(समझ में न आए /दिखाई न दे) ,वहाँ असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि होती है।
- यहाँ वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ दोनों का पूर्वापर क्रम उचित रूप से दिखाई नहीं देता।
- वाच्यार्थ और व्यंग्यार्थ की प्रतीति का अंतर इतना कम होता है कि इनको अलग-अलग अनुभव करना संभव ही नहीं होता।

एक पल मेरे प्रिया के दृग पलक के
ये उठे ऊपर सहज नीचे गिरे।
चपलता ने इस विकंपित पुलक से
दृढ़ किया मानो प्रणय संबंध था ।।

➢यहाँ रसध्वनि है।

❑संलक्ष्यक्रम ध्वनि :

- जहाँ वाच्यार्थ की स्पष्ट प्रतीति होने पर क्रम से व्यंग्यार्थ स्पष्ट होता है ,वहाँ संलक्ष्यक्रम ध्वनि होती है।
- यहाँ वाच्यार्थ के बाद व्यंग्यार्थ क्रम से संलक्षित होता है ,इसलिए इसे संलक्ष्यक्रम ध्वनि कहा जाता है ।
- वस्तु ध्वनि और अलंकार ध्वनि को इसके अंतर्गत रखा जा सकता है।

वस्तु ध्वनि

वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा –सी ,
वह दीपशिखा-सी शांत ,भाव में लीन ,
वह क्रूर काल-तांडव की स्मृति रेखा –सी ,
वह टूटे तरु की छूटी लता –सी दीन ,
दलित भारत की ही विधवा है ।

➢ यहाँ वस्तुध्वनि है।वस्तु का अर्थ –भाव अथवा संकल्पना ।

अलंकार ध्वनि

चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गंभीर ।
को घटि ये वृषभानुजा ,वे हलधर के बीर।।

➢ यहाँ व्यंग्यार्थ श्लेष पर आधारित है ,इसलिए यहाँ अलंकार ध्वनि है।


धन्यवाद!